STUDY NOTES · BASIC CONCEPT

ग्रहण के दौरान मंदिरों के

कपाट क्यों बंद होते हैं?

Art & Culture
26 Mar 2003

ग्रहण के दौरान मंदिरों के कपाट बंद करने की परंपरा भारतीय
संस्कृति और सनातन धर्म में सदियों पुरानी है, जिसके पीछे कई
शास्त्रीय और धार्मिक कारण निहित हैं. यह प्रथा मुख्य रूप से
शुद्धि , सूतक और आध्यात्मिक सावधानी से जुड़ी हुई है. इसके प्रमुख
शास्त्रीय और धार्मिक कारण इस प्रकार हैं:

धार्मिक कारण

1. सूतक काल: ग्रहण काल को शास्त्रों में 'सूतक ' का समय माना गया है,
जिसे आध्यात्मिक रूप से एक अशुद्ध और नकारात्मक अवधि समझा
जाता है. इस दौरान पूजा -अर्चना , भोग लगाना , मूर्ति स्पर्श और
अन्य बाह्य धार्मिक कर्म वर्जित होते हैं. चंद्र ग्रहण में
सूतक नौ घंटे पहले और सूर्य ग्रहण में बारह घंटे पहले शुरू हो
जाता है.
2. नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव : धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ,
ग्रहण के समय राहु और केतु का प्रभाव बढ़ जाता है, जिससे
वातावरण में नकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है. मंदिरों के
कपाट मूर्तियों और उनकी सकारात्मक ऊर्जा को इस नकारात्मक
प्रभाव से बचाने के लिए बंद किए जाते हैं.
3. प्राण -प्रतिष्ठित मूर्तियों की रक्षा : मंदिरों में स्थापित
विग्रहों को केवल पत्थर नहीं माना जाता, बल्कि उनमें 'प्राण -
प्रतिष्ठा ' होती है. ऐसा विश्वास है कि ग्रहण के समय
ब्रह्मांडीय विकिरण या अशुभ प्रभाव मूर्तियों की ऊर्जा को
प्रभावित कर सकता है. इसलिए कपाट बंद करके एक प्रकार का सुरक्षा
कवच बनाया जाता है.
4. भगवान का 'कष्ट ' काल: पौराणिक कथाओं के अनुसार , राहु और केतु
द्वारा सूर्य या चंद्र को ग्रसने की घटना को संकट का समय माना

www.becomeias.com YouTube: becomIAS | Instagram: howtobecomeias

गया है. भक्तों की मान्यता है कि इस दौरान भगवान को भी विश्राम
और एकांत दिया जाता है, इसलिए दर्शन स्थगित कर दिए जाते हैं.

शास्त्रीय कारण

1. वैदिक साहित्य और पुराणों में उल्लेख : मंदिरों के कपाट बंद
करने की यह परंपरा वैदिक साहित्य , पुराणों और धर्मशास्त्रों
में विभिन्न रूपों में मिलती है.
2. स्कंद पुराण में ग्रहण के समय स्नान , जप और दान का विशेष महत्व
बताया गया है, और देवमूर्तियों को स्पर्श न करने का निर्देश
मिलता है.
3. पद्म पुराण : ग्रहण को सूतक काल बताते हुए पूजा -अर्चना स्थगित
रखने की बात कहता है.
4. मत्स्य पुराण में ग्रहण के समय विशेष धार्मिक आचरण और नियमों
का उल्लेख मिलता है.
5. ब्रह्मवैवर्त पुराण में राहु -केतु की कथा और ग्रहण की पौराणिक
व्याख्या दी गई है.
6. धर्मसिन्धु जैसे धर्मशास्त्रीय ग्रंथ में स्पष्ट निर्देश है
कि सूतक काल में देवमूर्तियों को स्पर्श नहीं करना चाहिए और
ग्रहण समाप्ति पर शुद्धिकरण के बाद ही पूजा पुनः प्रारंभ करनी
चाहिए .

ज्योतिषीय दृष्टिकोण

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार , ग्रहण के दौरान राहु और केतु के प्रभाव
से ब्रह्मांड में अंधकार और नकारात्मक ऊर्जा का संचार बढ़ जाता है.
माना जाता है कि भगवान की मूर्तियां इस नकारात्मक ऊर्जा को सोख
सकती हैं, जिससे उनकी पवित्रता प्रभावित होती है. ग्रहण समाप्त
होने के बाद, मंदिरों में शुद्धिकरण की प्रक्रिया की जाती है,
जिसमें गंगाजल से मंदिर परिसर और मूर्तियों का शुद्धिकरण शामिल
है, जिसके बाद ही कपाट पुनः खोले जाते हैं और नियमित पूजा -अर्चना
शुरू होती है.

www.becomeias.com YouTube: becomIAS | Instagram: howtobecomeias